कृषि मञ्जूषा का द्वितीय अंक आप सभी सुधी पाठकजनों को समर्पित करते हुए मुझे एवं मेरे पूरे संपादकीय मण्डल को अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। समय पर इस अंक को प्रकाशित करने में जो सहयोग एवं योगदान विशेषकर लेखक बंधुओं द्वारा मिला है, वह अद्भुत ही नहीं, अपितु अकल्पनीय है। हमें आशा ही नही, अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह सिलसिला अबाध रूप से अनवरत चलता रहेगा। प्रवेशांक को जो प्रतिक्रिया मिल रही है, उससे "कृषि मञ्जूषा" की पूरी इकाई भाव विभोर है, कृतज्ञ एवं नतमस्तक है, यह प्यार वाकई कई मायनों में स्वप्निल है, हमारी उम्मीद से परे है। प्रवेशांक के सभी लेखों को आप सभी का ढ़ेर सारा प्यार मिला है, सभी लेख डाउनलोड़ हो रहे हैं। मुझे यह बताते हुये अपार खुशी हो रही है कि आवरण कथा" फसल घेरा : क्या है रहस्य?" को ना केवल सराहा ही गया है अपितु सर्वाधिक डाउनलोड़ भी हुआ है। "कृषि मञ्जूषा" का शाब्दिक अर्थ जानने की इच्छा जाहिर की गई थी तो मित्रों "कृषि मञ्जूषा" ''कृषि एवं मञ्जूषा'' नामक दो संस्कृत शब्दों से मिल कर बना हुआ है। दोनों ही स्त्रीलिंग शब्द है। 'कृषि' शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के 'कृष' धातु से हुई है, जिसका अर्थ है अनाज पैदा करने के लिए खेतों को जोतने-बोने का काम, किसानी, खेतीबाड़ी, काश्तकारी। जबकि मञ्जूषा की उत्पत्ति संस्कृत के मस्ज-ऊषन्, नुम् से हुई है, जिसके हिंदी में पर्यायवाची सिंगारदान, आभूषणों का डिब्बा, डिब्बे की तरह का एक ढक्कनदार पात्र, छोटा पिटारा या डिब्बा, बड़ा संदूक, पिंजडा, पत्थर, मजीठ आदि है। अर्थात कृषि मञ्जूषा का तात्पर्य कृषि संबन्धित क्रिया-कलापों को संग्रह करके करीने से प्रस्तुत करने वाला पात्र है।

यह अंक भी प्रवेशांक की भाँति कृषि उपयोगी, ज्ञानवर्धक के साथ-साथ रोचक सामाग्री से भरपूर है। इसका आवरण कथा नीलगाय पर है, क्योंकि यह चौपाया, फसलों को पलक झपकते साफ कर जाता है, उम्मीद है आवरण कथा पसंद आयेगी। इस अंक मे कश्मीरी सोना केसर की खेती पर रोचक जानकारी दी गई है। समय की माँग : समेकित कृषि प्रणाली पर भी किसानोपयोगी लेख है। बदलते जलवायु में ज्वार की लाभदायक खेती एवं भूमि व जल उत्पादकता को बढ़ाने पर भी लेख को स्थान दिया गया है। ग्रीष्म कालीन भिंडी की खेती एवं जैव नियंत्रक ट्राइकोडर्मा पर भी किसानोपयोगी सारगर्भित लेख सम्मिलित हैं। यह समय कृषि यन्त्रीकरण को बढ़ावा देने का है, अतः कृषि यन्त्रीकरण पर भी किसानोपयोगी लेख है। कड़कनाथ मुर्गी पर भी रोचक सामग्री को स्थान दिया गया है। दुग्ध उत्पाद पर विशेष जानकारी दी गई है। कुल मिला कर यह अंक अपने आप मे सम्पूर्ण है। सम्मानित लेखकों से यह विनम्र निवेदन करना चाहता हूँ, कि कृपया लेख, पत्रिका के प्रारूप में (सारांश एवं निष्कर्ष के साथ) कृतिदेव फांट में उच्च गुणवत्तायुक्त चित्र जे.पी.जी. में प्रेषित मेल से प्रेषित करने का कष्ट करें। साथ ही साथ जो भी रचनाएँ-लेख इस अंक में स्थान नहीं बना पाये हैं, उन्हें आगामी अंकों में स्थान दिया जाएगा। पाठकगणों से निवेदन है कि प्रकाशित लेखों पर प्रतिक्रिया एवं पत्रिका को और उपयोगी बनाने हेतु सुझाव कृपया हमें ई मेल से प्रेषित करने का कष्ट करें। हमारा ई-मेल का पता है - krishi.manjusha@gmail.com

अन्त में, कृषि मञ्जूषा को निम्न मुक्तक के साथ प्रस्तुत कर रहा हूँ।

व्यक्तित्व निखर जाता है मित्रों!, पहन कर उत्तम वेष-भूषा
धरती प्रफ्फुलित हो उठती है, पड़ती जब पहली किरण ऊषा
अन्नदाता पाएँ परिश्रम का फल, यह सबकी चाहत प्रत्युषा!
ज्ञानार्थ अनुभवों को संजों कर लायी, फिर से कृषि मञ्जूषा

साभार

(अनिल कुमार सिंह)
प्रधान संपादक